

यस्मात्पश्यति दूरस्थाः सर्वानर्थान्निर्दिष्टाः । चारेण तस्मादुच्यते राजान-
श्चारचतुषः ॥ R. 3, 37, 9. M. 9, 256; vgl. Hrt. III, 35.

चारचणा (चार + चण) adj. graceful in gait or motion Wils.

चारचुचु (चार + चु) adj. remarkable in walking, of graceful carriage
Wils.

चारज्या (चार + ज्या) f. the sine of the ascensional difference Wils.

चारटिका f. ein best. Parfum (नली) RĀG. im ÇKDr.

चारटी f. N. zweier Pflanzen: 1) = पञ्चचारिणी (s. d.) AK. 2, 4, 5, 11.
— 2) = भूम्यामली (s. d.) RĀG. im ÇKDr.

चारण (von चरण) 1) m. Wanderer, Pilger MBh. 1, 4907. अल्पप्रज्ञैः
सह महं न कुर्यान्न दीर्घसूत्रैरलसैश्चारणैश्च 5, 1039 (vgl. PĀNĀT. V, 53).
नटनर्तकचारणसंकुल PĀNĀT. 43, 4. RĀG-TAR. 1, 222. — 2) m. ein her-
umziehender Schauspieler, — Sänger AK. 2, 10, 12. H. 329. चारणाश्च
सुपर्णाश्च पुरुषाश्चैव दाम्बिकाः । रत्नोसि च पिशाचाश्च तामसीधूतमा गतिः ॥
M. 12, 44. °दाराः 8, 362. VARĀH. BRH. S. 42 (43), 66. चारणैकमयी च भुः
KATHĪS. 23, 85. — 3) m. ein himmlischer Sänger: अभिष्टुतश्च विविधैर्दे-
वराज्ञां चारणैः MBh. 5, 4104. INDR. 2, 1. SUND. 2, 4. R. 1, 16, 9. (लोकान्)
सार्धसंघान्सचारणान् 43, 50. 49, 1. 76, 10. 3, 17, 28. 60, 17. 5, 5, 1. 51, 22.
95, 36. ÇĀK. 47. Bhāg. P. 2, 1, 36. 6, 13. 3, 10, 26. Gīt. 1, 2. — 4) m. Kund-
schafter (vgl. चार, चारक) Bhāg. P. 4, 16, 12. — 5) proparox. N. pr. einer
Localität v. l. im gaṇa संकलादि zu P. 4, 2, 75.

चारणविद्य (चा + विद्या) m. pl. N. pr. einer Schule des AV. Ind.
St. 3, 277. °विद्य und चरणविद्य 278.

चारथ (von 1. चर oder चरथ) adj. fahrend, wandernd: पञ्चारेथे गृणे श-
तमुष्ट्रं अचिक्रदत् RV. 8, 46, 31.

चारपथ (चार Kundschafter + पथ) m. ein Ort an dem zwei Wege zu-
sammenkommen H. 986.

चारभट 1) m. ein beehrter Mensch H. 365. an. 2, 464. कश्चिन्वति कु-
लपुरुषो वेश्याधरपल्लवं मनोज्ञमपि । चारभटैश्चेत्कर्तव्यं तन्निष्ठीवन्श-
रावम् ॥ BHART. 1, 91. Hier wohl Soldat oder sind etwa mit BOHLEN
चार und भट als zwei getrennte Wörter zu fassen? — 2) f. Helden-
muth TRIK. 3, 3, 321. H. an. 2, 385. — Vgl. आरभट.

चारमिकै = चरममर्धति वेद वा gaṇa वसन्तादि zu P. 4, 2, 63.

चारवायु (चार? + वायु) m. Sommerlüftchen TRIK. 1, 1, 77.

चारायणी patron. von चर gaṇa नडादि zu P. 4, 1, 99. °णी f. 63, Sch.

चारायणाक adj. von den Kārājāna herkommend P. 4, 3, 30, Sch.

चारायणीय m. pl. die Schüler der Kārājāna P. 4, 1, 89, Sch. Verz.
d. B. H. No. 142. Ind. St. 1, 68. 3, 237. 434. — Vgl. कम्बल°.

चारिक s. ब्रह्म°, मास°; चारिका s. u. चारक.

चारितार्थ्य (von चरितार्थ) n. Erreichung des Zweckes KAP. 3, 69.

चारित्र (von 1. चर, vgl. शामित्र) Uṇ. 4, 173. 1) m. N. pr. eines Marut
(der Bewegliche) HARIV. 11847. LANGL.: चारित्र्य. — 2) f. आ Tamarin-
denbaum ÇANDAR. im ÇKDr. — 3) n. a) das Verfahren, Handlungsweise,
Wandel (H. 843); insbes. ein guter Wandel, ein guter Name: धित्ते चा-
रित्रमीदृशम् R. 3, 59, 9. चारित्रेधनवस्थितः 6, 88, 14. उष्ट्रचारित्रा PĀNĀT.
IV, 58. चारित्रेण युक्तः R. 1, 1, 3. चारित्राणा 5, 19, 5. N. 18, 9. चारित्रं येन
नो लोके हृषितम् HARIV. 10204. °हृषक R. 4, 9, 33. MRĀKH. 53, 9. °धंश
14. — b) Cerimonie VJUTP. 52. — Vgl. चरित्र.

II. Theil.

चारित्रवती (von चारित्र) f. Bez. eines Samādhi VJUTP. 19.

चारित्र्य (von चरित्र oder चा°) n. = चारित्र n.: अपरीक्षित° adj. MBh.
12, 12357. मरुताम् R. 5, 82, 16. लब्धा चारित्र्यमुद्रिः MRĀKH. 177, 25. यौव-
नमत्रापराध्यति न चारित्र्यम् 145, 21. चारित्र्याच्चारुदत्तं चलपसि 147, 9.
स्वचारित्र्यं नित्यमयो न ज्ञायात् MBh. 13, 2566. R. 6, 98, 33. 100, 16. 103, 15.

चारिन् (von 1. चर) 1) adj. a) beweglich: (लोकेषु) संस्थासुचारिषु MBh.
7, 372. — b) am Ende eines comp.: α) sich bewegend, herumgehend,
umherwandelnd, lebend, sich aufhaltend: भूमि° INDR. 1, 31. या प्रेत्या-
तःपुरचारिणी AK. 2, 6, 1, 18. शरीरात्तर° Hrd. 4, 4. प्रेत°, भूत° MBh. 13,
1163. प्राणायानौ — नासाभ्यन्तरचारिणी BHAG. 3, 27. (भूतानाम्) सर्वात्त-
श्चारिणाम् KATHĪS. 3, 25. अत्र° R. 3, 58, 10. अरण्य° PĀNĀT. 69, 1. ग्रामा-
रण्याम्बुव्यामयुनिशोभय° VARĀH. BRH. S. 85, 6. स्वकालोत्क्रम° 87, 2.
उग्र° Bhāg. P. 5, 22, 8. अमीत° R. 5, 37, 39. गूढ° RAGH. 19, 33. पाद° auf
Füssen gehend Bhāg. P. 6, 4, 9. पुच्छास्य° SUÇR. 1, 207, 3. निमेषात्तर° in
einem Augenblick sich wohin verfügend, zu einem Gange nur eines
Augenblickes bedürftig MBh. in BENF. Chr. 62, 52. HARIV. 9139. Vgl.
अम्बु°, एक°, ख°, गिरि°, गो°, जल°, दिवि°, नक्त°, मध्य°, वन°. —
β) handelnd, zu Werke gehend; übelnd, thuend: प्रच्छन्न° R. 3, 31, 26.
पाप°, शुभ° MBh. 14, 759. PĀNĀT. 227, 22. दुष्ट° R. 2, 74, 2. 3, 55, 42.
Vet. 21, 7. दुःख° R. 3, 23, 14. Vgl. धर्म°, वक्र°, ब्रह्म°, व्रत°, स्वच्छ-
न्द°. — γ) lebend von: धान्य° SUÇR. 1, 208, 12. — 2) m. Fusssoldat:
अन्वष्टं दश धानुष्का धानुष्के सप्त चारिणः MBh. 6, 3545. — 3) f. चारिणी
N. einer Pflanze (करुणी) RĀG. im ÇKDr.

चारिवाच् f. = कर्कटप्रङ्गी Wils. Im ÇKDr. finden wir u. d. letzten
W. kein ähnliches Synonym.

चारु (wohl von चन् = कन्) Uṇ. 1, 3. 1) adj. a) angenehm, willkom-
men; gebilligt, geschätzt, lieb, carus; mit dem dat. oder loc. der Per-
son: (सुतः) चारुर्हृताय पीतये RV. 1, 137, 2. 4, 49, 2. मद् 7, 22, 2. 8, 5, 14.
रुविम् 8, 34, 5. अमृतस्य चारुणः 9, 70, 2. 108, 4. अथर् 1, 19, 1. 5, 71, 1. मा-
ध्यंदिनं सर्वं चारु यत्ते 3, 32, 1. (सामः) चारुर्मन्त्रे वरुणे च 9, 61, 9. कृदा
मतिं ज्ञेये चारुमयै 10, 91, 14. अतिविश्वारुण्यै 2, 2, 9. कृतं नो यत्तं
विद्वेषु चारुम् 7, 84, 3. 1, 55, 4. VS. 33, 17. ÇĀKH. ÇR. 1, 3, 9. TBR. 3, 1, 1,
9. एतदेव चारु dieses gefällt mir, so ist es recht PĀNĀT. 256, 14. adv.:
चारु वदानि संगतेषु so dass es gefällt AV. 7, 12, 1. 12, 1, 56. चारु संमेलो
वदतु वार्चमेताम् 14, 1, 31. समो कृदे पवते चारु मत्सरः RV. 9, 72, 7. 86,
21. — b) lieblich, gefällig, schön AK. 3, 2, 1. 3, 4, 82, 143. 24, 162. 36,
207. TRIK. 3, 1, 13. H. 1444. MED. r. 33. दृष्टो RV. 9, 102, 6. 4, 6, 6. चर्तुः 2,
19. यशाः पृथिव्या अदित्या उपस्थे ऽहं भूयसं सवितेव चारुः AV. 13, 1, 38.
नामं RV. 2, 33, 11. 3, 5, 6. 54, 16. 9, 109, 14. यत्ते ज्ञानं चारु चित्रम् 5, 3, 3.
48, 5. मुखं DAÇ. 2, 66. N. 5, 6. °सर्वाङ्गी R. 1, 63, 6. 9, 22, 52. °सर्वाङ्गदर्शन
N. 12, 18. °स्मिता, °वक्त्रा, °नेत्रा R. 5, 22, 29. Bhāg. P. 1, 19, 26. 3, 8, 26.
°रव R. 1, 2, 32. °दर्शना N. 17, 13. R. 1, 2, 12. °विक्रम MBh. 13, 622.
°कर्मन् MRĀKH. 113, 5. °कृत्य PĀNĀT. Pr. 9. °चारित्रता RĀG-TAR. 2, 58.
चाट्टाणि धमसि wohl herumgaukelnde Bilder oder Farben SUÇR. 2, 316,
18. (compar.: सर्वं प्रिये चारुतरं वसते R. 6, 2. adv.: चारु विस्मिरे केशाः
कुचाये HARIV. 4097. 4644. 4653. KĀURAP. 17. — 2) m. Bein. Brhaspa-
ti's MED. N. pr. eines Sohnes des Kṛṣṇa von der Rukmiṇi HARIV.
6699. VP. 378. eines Kākavartin VJUTP. 92. SCHIEFNER, Lebensb. 232

63